हिन्दी विभाग
भाषा संकाय
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अधीन स्थापित)
धर्मशाला,जिला-कांगड़ा,हिमाचल प्रदेश-176215
www.cuhimachal.ac.in

पाठ्यक्रम शीर्षक : जनपदीय भाषा साहित्य: काँगड़ी बोली के संदर्भ में

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 405 (क) [HIL405 क]

स्तर : 2

श्रेय : 2 श्रेय

श्रेय तुल्यमान : 2 श्रेय

व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/ वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है]

पाठ्यक्रम परिणाम :

- इसका अध्ययन एवं जनपदीय भाषा-बोलियों तथा उनमें सृजित साहित्य की जानकारी प्रदान करना।
- काँगड़ा जनपदीय बोली का अध्ययन करने से इस जनपद की बोलियों का उन्नयन होगा, इससे हिंदी भाषा व साहित्य का विकास होगा।
- जीवन मूल्यों के साथ पारंपरिक व्यवहारों को पकड़े रखना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

अधिगम परिणाम :

- जनपदीय साहित्य के अध्ययन से छात्रों का सर्वांगीण विकास होगा।
- छात्रों को आंचलिक जन-जीवन, संस्कृति तथा सामयिक बदलावों का बोध होगा।
- छात्रों के अंतर्मन में बौद्धिकता, मर्मस्पर्शिता, रसवत्ता तथा लयवत्ता की जानकारी मिलेगी।
- जनपदीय लेखकों के जीवन के अनुभवों और उपलब्धियों को उनके रचित साहित्य में पढ़ने से अपनी भाषा-बोली तथा सांस्कृतिक परंपराओं का ज्ञान बढ़ेगा।

उपस्थिति अनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : 1. मध्यावधि परीक्षा - 20%
2. सत्रांत परीक्षा - 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20 %

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई –1 **(4 घंटे)**

1) जनपदीय बोलियाँ: अर्थ एवं परंपरा
2) काँगड़ी बोली: अर्थ, परंपरा एवं क्षेत्र विस्तार
3) काँगड़ी (हिमाचली) का भाषा वैज्ञानिक स्वरूप एवं क्षेत्रीय ध्वनि रूप

इकाई-2 **(4 घंटे)**

1) स्वतंत्रताकालीन लोक गायन
2) स्वतंत्रताकालीन काँगड़ी प्रतिनिधि कवि (पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम तथा अन्य कवि)
3) काँगड़ी कविता एवं प्रतिनिधि कवि (1966-1980 तक)

समीक्षा एवं व्याख्या:

(क) सामाजिक, श्रृंगारिक और आज़ादी चेतना संबंधी कविताएँ
पुस्तक: "पहाड़ी सरगम" पाँच कविताएँ
लेखक: "पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम

(ख) पुस्तक: "मेरा देश म्हाचल"
लेखक: " पीयूष गुलेरी" (प्रथम पाँच कविताएँ)

(ग) पुस्तक: " चेते"
लेखक: गौतम शर्मा व्यथित (प्रथम पाँच कविताएँ)

इकाई-3 **(4 घंटे**

1) काँगड़ी कथा-साहित्य की विकास यात्रा
2) प्रतिनिधि काँगड़ी कहानीकारों का अध्ययन
3) काँगड़ी उपन्यास की विकास यात्रा

समीक्षा एवं व्याख्या:

(क) कहानी: " नूरां"
लेखक: देसराज डोगरा (पत्रिका " हिमभारती" हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला)

(ख) उपन्यास: " जौंडा" पुरस्कृत
लेखक: रवि मंढोतरा (प्रकाशक- पत्रिका "हिमभारती" हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला)

इकाई -4 **(4 घंटे)**

1) काँगड़ी में लिखित एकांकी एवं नाटकों की विकास यात्रा
2) प्रमुख एकांकीकारों एवं नाटककारों का परिचय

समीक्षा एवं व्याख्या:

(क) एकांकी: "बड़ा बड्डा माहणू"
लेखक: प्रत्यूष गुलेरी (प्रकाशक " हिमभारती" वर्ष-1972)

इकाई -5 **(4 घंटे)**

1) निबंध: अर्थ एवं स्वरूप
2) काँगड़ी में लिखित सांस्कृतिक एवं समीक्षात्मक निबंध

समीक्षा एवं व्याख्या:

(क) निबंध: "दयालु धौलधार"
लेखक: वेद प्रकाश अग्नि (हिमाचल प्रदेश भाषा विभाग, चंगेर फुल्लां दी कने पहाड़ी लेखमाला)

संभावित ग्रन्थ :

आधार ग्रंथ

1 हिमाचल प्रदेश लोक संस्कृति और साहित्य, गौतम शर्मा व्यथित, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली
2 हिमाचल के लोकगीत, गौतम शर्मा व्यथित, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
3 हिमाचल का हिंदी साहित्य का इतिहास, सुशील कुमार फुल्ल,वंदना पब्लिशर्स, लुधियाना
4 हिमाचल प्रदेश की लोक कथाएँ, सुदर्शन वशिष्ठ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
5 गद्दी, अमर सिंह रणपतिया, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला
6 पहाड़ी साहित्य कने लोक साहित्य, गौतम शर्मा व्यथित, शीला प्रकाशन, नेरटी, काँगड़ा
7 हिमाचली लोक कथां, प्रत्यूष गुलेरी
8 हिमाचल के लोक नाट्य, तुलसी रमण संपादक, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, 9 शिमला
10 पत्रिका हिमभारती, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला
11 जनपदीय भाषाओं का साहित्य, रमण शांडिल्य, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
12 जनपदीय भाषा साहित्य (अवधी काव्य), सूर्य प्रकाश दीक्षित, संपादन,प्रकाशन केंद्र, लखनऊ